शिक्षकों के आत्म–प्रभावकारिता का अध्ययन

रेखा यादव
शोधार्थी (शिक्षा संकाय)
स्वामी श्री स्वरूपानद सरस्वती
महाविद्यालय, हुड़कों, भिलाई (छ.ग.)

डॉ. शीजा थॉमस
सहायक प्राध्यापक (शिक्षा संकाय)
विभागाध्यक्ष,
सेंट थॉमस कॉलेज, रूआंबांधा,
भिलाई (छ.ग.)

डॉ. तृषा शर्मा
सह–प्राध्यापक (शिक्षा संकाय)
स्वामी श्री स्वरूपानद सरस्वती
महाविद्यालय, हुड़को, भिलाई (छ.ग.)

सारांश –

प्रस्तुत शोध अध्ययन का मुख्य उद्देश्य शिक्षकों के आत्म–प्रभावकारिता का अध्ययन करना है। प्रस्तुत अध्ययन हेतु न्यादर्श के रूप में रायपुर शहर के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के 100 शिक्षकों जिसमें शासकीय विद्यालयों के 50 शिक्षकों तथा अशासकीय विद्यालयों के 50 शिक्षकों का यादृच्छिक रूप से चयन किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में शिक्षक आत्म–प्रभावकारिता मापनी हेतु विशाल सूद ओर सपना सेन (TSES SVSS) (2017) द्वारा निर्मित उपकरण प्रयोग किया गया है। चयनित शिक्षकों पर उपरोक्त उपकरण का प्रशासन करने उनके प्राप्तांक ज्ञात किये गये तथा परिकल्पनाओं के सत्यापन के लिए टी–परीक्षण ज्ञात किया गया। अध्ययन के निष्कर्ष दर्शाते है कि शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के शिक्षकों के आत्म प्रभावकारिता में सार्थक अंतर पाया गया तथा शासकीय विद्यालय के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के आत्म प्रभावकारिता में सार्थक पाया गया।

किवर्ड : शिक्षक, शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय, आत्म– प्रभावकारिता

प्रस्तावना –

शिक्षा प्रक्रिया एक विशिष्ट प्रक्रिया जो प्रत्येक ढंग शिक्षार्थी पर केन्द्रित है जो प्रत्येक तरीकें से शिक्षा ग्रहण वाले के लिए आयोजित की जा जाती है। निःसंदहेह इस प्रक्रिया में कई लोग सक्रिय भूमिका निभाते है। शिक्षा प्रक्रिया विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास हेतु प्लेटफार्म तैयार कर उन्हें प्रदान करने एवं उसे अपनी योग्यताओं, क्षमताओं अन्य कौशलों को उत्कृष्ट रूप में विकास कर विभिन्न स्तर पर अवसर प्रदान करती प्रत्येक व्यक्ति जन्म से ही अन्य व्यक्ति से अलग योग्यता व क्षमता रखता है। सभी एक दूसरे से भिन्न होते है। अध्यापक शिक्षण प्रक्रिया का मूल आधारशिला है। शिक्षक के व्यक्तित्व का उनके छात्रों पर अधिक प्रभाव पड़ता है और उनके भावी जीवन का नींव रखते है। समाज में अध्यापक का दर्जा उसके सामाजिक, व्यक्तित्व, सांस्कृतिक, नैतिकता को प्रतिबिंबित करता है। शिक्षक देश का सबसे अधिक नेतृत्वशील, जागरूक, सामाजिक नागरिक है, शिक्षकों को अपने कार्य पर विश्वास होता है। वह समाज में परिवर्तन का सशक्त माध्यम है। इसी प्रकार शिक्षा ही हमें जीवन भर ज्ञानोर्जन देता है। शिक्षण प्रभावशीलता एक प्रभावी शिक्षक अपने शिक्षण कौशल युक्त अपने लक्ष्य, कर्तव्य और व्यक्तित्व गुणों का प्रभाव छात्रों पर पड़ता है। शिक्षक व्यावसायिक समायोजन शिक्षक अपने पेशेवर सामाजिक, आर्थिक, अकादमिक, सांस्कृतिक, विद्यालाय कार्य गतिविधियाँ शैक्षणिक कार्यों में अपने पूर्ण रूप से सामयोजित कर लेता है वही आदर्श शिक्षक कहलाता है। शिक्षक आत्म–प्रभावकारिता वाले शिक्षक अपनी भावनाओं को अपनी सकारात्मकता के साथ लक्ष्यों आत्म विश्वास की भावना से पूर्ण शिक्षक ही अपने छात्रों को सही दिशा निर्देशन कर लक्ष्यों को प्राप्त करता है।

आत्म–प्रभावकारिता का अर्थ –

आत्म प्रभावकारिता विभिन्न क्रियान्वयन के शिक्षकों द्वारा विशेष तरह के पाठ्यक्रमों को प्रभावी तरीकें तथा व्यवस्थित ढंग से पूर्ण करने की उनकी कौशल के विषय में शिक्षकों के निर्णय लेने की क्षमता को दर्शाता है। आत्म प्रभावकारिता व्यक्ति के द्वारा स्वयं किए गए कार्य कौशल से युक्त स्व–प्रणाली का हिस्सा है यह प्रणाली एक प्रमुख भूमिका निभाता है, शिक्षक स्थितियों को कैसे समझते है और विभिन्न स्थितियों के उत्तर में शिक्षक कैसे व्यवहार करते है।

अल्बर्ट बंदुरा के अनुसार –

आत्म–प्रभावकारिता से तात्पर्य विशिष्ट प्रदर्शन उपलब्धि हासिल करने के लिए आवश्यक व्यवहारों को निष्पादित करने की अपनी क्षमता में किसी व्यक्ति के विश्वास से है। आत्म–प्रभावकारिता को एक गतिशील आत्म–योजना के रूप में परिभाषित करता है जो दुनिया में सक्षमता से कार्य करने वाले व्यक्ति के दृष्टिकोण से संबंधित है। आत्म–प्रभावकारिता का विश्वास चार स्रोतों के आधार पर बनता है पिछला अनुभव, विचित्र अनुभव (दूसरों का अवलोकन), सामाजिक अनुनय और शारीरिक अवस्था)

संबंधित शोध अध्ययन –

- **डॉ. टी. प्रदीप कुमार (2013)** ने सरकारी और निजी स्कूल के शिक्षकों के बीच आत्म–प्रभावकारिता का तुलनात्मक अध्ययन किया। अध्ययन का उद्देश्य सरकारी और निजी स्कूल के शिक्षकों के बीच आत्म–प्रभावकारिता का अध्ययन करना था। वर्तमान अध्ययन के लिए शोधकर्ता द्वारा निर्मित शिक्षक स्व–प्रभावकारिता पैमाना है। अध्ययन कनकपुरा के सरकारी व निजी विद्यालय के 247 शिक्षकों पर आधारित है। निष्कर्षों से पता चलता है कि सरकारी

व निजी स्कूलों के पुरूष और महिला शिक्षकों की आत्म–प्रभावकारिता में महत्वपूर्ण अंतर नही है।

- **जेना (2017)** ने विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय शिक्षकों के आत्म–वास्तविकीकरण, सामाजि–आर्थिक स्थिति एवं कार्य संतुष्टि का अध्ययन किया गया। वर्णनात्मक सर्वेक्षण अध्ययन में विश्वविद्यालय स्तर के 100 एवं महाविद्यालय स्तर के 200 शिक्षकों का सामान्य यादृच्छिक तकनीक से चयन किया गया। परिणाम में पाया गया कि विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय शिक्षकों का आत्म–वास्तविकीकरण, सामाजिक–आर्थिक स्थिति एवं कार्य संतुष्टि का स्तर उच्च है।
- **अरविन्द एवं प्रसाद (2018)** ने प्रबंधन संकाय के स्नातकोत्तर स्तर पर अध्यापन करने वाले शिक्षकों के आत्म–वास्तविकीकरण एवं शिक्षण प्रभावशीलता के मध्य संबंध का अध्ययन किया। अध्ययन का उद्देश्य प्रबंधन संकाय के स्नातकोत्तर स्तर पर अध्यापनरत शिक्षकों के आत्म–वास्तविकीकरण का उनकी शिक्षण प्रभावशीलता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना था। प्रदत्तों के संकलन के लिए अंतिम वर्ष में अध्ययनरत कुल 216 विद्यार्थियों द्वारा कुल 19 शिक्षकों का मूल्यांकन कराया गया। निष्कर्ष में प्राप्त हुआ कि शिक्षकों का आत्म–वास्तविकीकरण उनकी शिक्षण प्रभावशीलता को सार्थक धनात्मक रूप से प्रभावित करता है।
- **साहब राम एवं रजनी (2019)** ने विश्वविद्यालय शिक्षकों के आत्म–वास्तविकीकरण का तुलनात्मक अध्ययनन किया। अध्ययन का उद्देश्य विद्यविद्यालय के शिक्षकों में आत्म–वास्तविकीकरण का अनभव के आधार पर अध्ययन करना था। अध्ययन हेतु राजस्थान राज्य के जयपुर संभाग में स्थित सरकारी एवं निजी विश्वविद्यालयों में कार्यरत 196 शिक्षकों का न्यादर्श हेतु चयन किया गया। अध्ययन हेतु हरदेव ओझा द्वारा निर्मित (SAS-OH) मापनी का प्रयोग किया गया। विश्लेषित आंकड़ों से ज्ञात हुआ कि विश्वविद्यालय शिक्षकों के आत्म–वास्तविकीकरण में लैगिक आधार एवं अनुभव के आधार पर सार्थक अंतर नहीं पाया गया जबकि संस्था (सरकारी एवं निजी) के आधार पर विश्वविद्यालय शिक्षकों के आत्म–वास्तविकीकरण में सार्थक अंतर पाया गया।
- **अनिता एवं श्वेता (2020)** ने महिला शिक्षकों की शिक्षक आत्म–प्रभावकारिता और आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता के संबंध में व्यावसायिक तनाव का अध्ययन किया। अध्ययन का उद्देश्य महिला शिक्षकों के व्यावसायिक तनाव, शिक्षक आत्म–प्रभावकारिता और आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता के बीच संबंधों का पता लगाना था। अध्ययन हेतु न्यादर्श के रूप में पंजाब राज्य के पांच जिलों से यादृच्छिक रूप 500 महिला शिक्षकों को सम्मिलित किया गया। अध्ययन के निष्कर्षों से ज्ञात होता है कि व्यावसायिक तनाव, शिक्षक आत्म–प्रभावकारिता और महिला शिक्षकों की आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता के बीच एक महत्वपूर्ण और नकारात्मक संबंध पाया गया।
- **ब्रैंग सेन एवं अन्य (2022)** में लिंग, शिक्षण अनुभव के वर्षों, शैक्षिक पृष्ठभूमि के अनुसार प्राथमिक शिक्षा में शिक्षण के लिए शिक्षकों की आत्म–प्रभावकारिता का तुलनात्मक अध्ययन किया। अध्ययन का उद्देश्य प्राथमिक शिक्षा में पढ़ाने के लिए शिक्षकों की आत्म–प्रभावकारिता (छात्र सहभागिता, निर्देशात्मक रणनीतियों और कक्षा प्रबंधन के संदर्भ में) का अध्ययन करना था। शोध में म्यामांर में चर्च आधारित प्राथमिक विद्यालय में पढ़ाने वाले 127 शिक्षकों पर अध्ययन किया गया। डाटा संग्रह के लिए वूलफोफ होय एवं मोरन द्वारा निर्मित प्रभावकारिता स्केल का प्रयोग किया गया। अध्ययन के निष्कर्षों से पता चला कि प्राथमिक शिक्षा में पढ़ाने वाले शिक्षकों को आत्म–प्रभावकारिता में उनके लिंग, शिक्षण के अनुभव वर्षों और शैक्षिक पृष्ठभूमि में कोई महत्वपूर्ण अंतर नही है।
- **चंद्रिका एवं अन्य (2022)** ने शिक्षण अनुभव और लिंग के संबंध में उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के बीच आत्म–प्रभावकारिता का अध्ययन किया। अध्ययन का उद्देश्य लिंग और शिक्षण अनुभव के संदर्भ में उच्च माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की आत्म–प्रभावकारिता का अध्ययन करना था। आंकड़ों के संग्रहण हेतु मथुरा जिले के विद्यालयों के 110 शिक्षकों को न्यादर्श हेतु चयन किया गया। निष्कर्षों से ज्ञात हुआ कि शिक्षण अनुभव के संबंध में शिक्षकों के बीच आत्म–प्रभावकारिता में महत्वपूर्ण अंतर है।
- **निकोलस मैनुअल ग्रिफिन (2022)** ने पारंपरिक या वैकल्पिक प्रमाणीकरण मार्गों में शिक्षकों के मध्य आत्म–प्रभावकारिता का तुलनात्मक अध्ययन किया। अध्ययन का उद्देश्य पारंपरिक या वैकल्पिक प्रमाणीकरण में शिक्षकों के मध्य प्रभावकारिता का अध्ययन है। डाटा संग्रहण हेतु विद्यालय में कार्यरत 90 शिक्षकों को न्यादर्श हेतु चयनित किया गया। अध्ययन में मोरन एवं वूलकोफ होय द्वारा निर्मित (टीएसईएस इन्वेंट्री) उपकरण का प्रयोग किया गया। निष्कर्ष में पाया गया कि यदि शिक्षक तैयारी की कमी के कारण इस्तीफा देते है तो आत्म–प्रभावकारिता को शिक्षक की कमी के रूप में पहचाना जा सकता है।

अध्ययन की आवश्यकता –

बालक कच्ची मिट्टी की तरह होता है चाहे उसे जिस भी रूप में ढाल ले। बालक का सर्वांगीण विकास में शिक्षक का ही महत्वपूर्ण योगदान होता है। शिक्षक की भूमिका विद्यार्थियों को प्रेरणा प्रदान करने, उनमें उत्साहवर्धन करने, शिक्षा प्रदान कर उन्हें उन्नति हेतु पथ प्रदर्शित करने लिए है। शिक्षक की भूमिका सदैव एक सूत्रधार की तरह होती है, आत्म–प्रभावकारिता से तात्पर्य किसी काम को पूर्ण करने की क्षमता में किसी व्यक्ति के विश्वास से है। आत्म–प्रभावकारिता वाले व्यक्ति ऐसे लक्षण दिखाते हैं जिनमें स्व–विश्वास, सही स्व–मूल्यांकन, जोखिम लेने की प्रबलता और उपलब्धि की भावना शामिल होती है। आत्म–प्रभावकारिता यह निर्धारित करती है कि हम किन लक्ष्यों के साथ आगे बढ़ें, हम उन लक्ष्यों को हम कैसे पूर्ण कर सकते हैं, और हम अपने उपलब्धि और प्रदर्शन पर किस तरह से सोचते है और उनमें कामयाब होने हेतु क्या प्रयास करते है। कामयाब होने की अपनी सक्षमता में हमारा भरोसा इस बात की भूमिका अदा करता है कि हम कैसे सोचते हैं, हम कैसे कार्य करते

हैं और हम देश–दुनिया तथा समाज में अपने स्थान के विषय में में कैसा महसूस करते हैं। इसी उद्देश्य को पूर्ण करने के लिए शोध कार्य में इस समस्या का चयन किया गया है।

अध्ययन का उद्देश्य –

- शिक्षकों के आत्म प्रभावकारिता का अध्ययन करना।
- शासकीय विद्यालय के शिक्षकों के आत्म प्रभावकारिता का अध्ययन करना।
- अशासकीय विद्यालयों के शक्षकों के आत्म प्रभावकारिता का अध्ययन करना।

अनुसंधान विधि –

प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्य की प्राप्ति का परिकल्पना के परीक्षण हेतु आंकड़ें एकत्र करने के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन की परिसीमा –

- प्रस्तुत अध्ययन रायपुर शहर तक सीमित किया गया हैं
- प्रस्तुत अध्ययन रायपुर शहर के उच्चतर माध्यमिक स्तर के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों तक सीमित है।
- अध्ययन हेतु शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के 100 शिक्षकों तक सीमित किया गया है।

न्यादर्श –

अध्ययन में परिकल्पनाओं के विश्लेषण के लिए रायपुर शहर के उच्चतर माध्यमिक स्तर के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के 100 शिक्षकों जिसमें शासकीय विद्यालयों के 50 (25 शिक्षक एवं 25 शिक्षिकाएँ) तथा अशासकीय विद्यालयों के 50 शिक्षकों (25 शिक्षक एवं 25 शिक्षिकाएँ) को यादृच्छिक रूप से न्यादर्श हेतु चयन किया गया है।

सांख्यिकीय विश्लेषण –

शून्य परिकल्पना से प्राप्त प्रदत्तों को विश्लेषण मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन तथा सार्थकता ज्ञात करने हेतु टी–मूल्य का प्रयोग किया गया है।

परिकल्पना परिणाम व विश्लेषण –

प्रस्तुत शोध की समस्या रायपुर शहर के उच्चतर माध्यमिक स्तर के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं से प्राप्त आंकड़ों की व्याख्या विश्लेषण एवं निष्कर्ष हेतु परिकल्पना का सत्यापन किया गया।

परिकल्पना –

H_{01} –

शासकीय तथा अशासकीय विद्यालय के शिक्षकों के आत्म प्रभावकारिता में सार्थक अंतर नही पाया जायेगा।

उपर्युक्त परिकल्पना की सत्यता की जाँच करने के लिए शोधकर्ता ने शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के आत्म प्रभावकारिता का मध्यमान, प्रमाणिक विचलन ज्ञात कर टी–मूल्य ज्ञात किया गया। प्राप्त मध्यमान, प्रमाणिक विचलन व टी–मूल्य को निम्न तालिका में दर्शाया गया है।

सारणी क्रमांक 1.1
शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों से प्राप्त आँकड़ें

समूह	प्रदत्तो की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	टी–मूल्य
शासकीय शिक्षक	50	190	26.7	1.76
अशासकीय शिक्षक	50	198.4	30	
df = 98 (1.66) t > (0.05) , सार्थक अंतर पाया गया				

अतः इस परिकल्पना से यह स्पष्ट होता है कि शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के आत्म प्रभावकारिता में सार्थक अंतर पाया गया।

अतः यह परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

H_{02} –

शासकीय विद्यालय के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के आत्म प्रभावकारिता में सार्थक अंतर नही पाया जायेगा।

उपर्युक्त परिकल्पना की सत्यता की जाँच करने के लिए शोधकर्ता ने शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के आत्म प्रभावकारिता का मध्यमान, प्रमाणिक विचलन ज्ञात कर टी–मूल्य ज्ञात किया गया। प्राप्त मध्यमान, प्रमाणिक विचलन व टी–मूल्य को निम्न तालिका में दर्शाया गया है।

सारणी क्रमांक 1.2
शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक–शिक्षिकाओं से प्राप्त आँकड़ें

समूह	प्रदत्तो की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	टी–मूल्य
शासकीय शिक्षक	25	187.2	26.6	3.7
शासकीय शिक्षिका	25	163.5	17.5	
df = 48 (1.67) t > (0.05) , सार्थक अंतर पाया गया				

अतः इस परिकल्पना से यह स्पष्ट होता है कि शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के आत्म प्रभावकारिता में सार्थक अंतर पाया गया।

अतः यह परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

H_{03} –

अशासकीय विद्यालय के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के आत्म प्रभावकारिता में सार्थक अंतर नही पाया जायेगा।

उपर्युक्त परिकल्पना की सत्यता की जाँच करने के लिए शोधकर्ता ने अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के आत्म प्रभावकारित का मध्यमान, प्रमाणिक विचलन ज्ञात कर टी–मूल्य ज्ञात किया गया। प्राप्त मध्यमान, प्रमाणिक विचलन व टी–मूल्य को निम्न तालिका में दर्शाया गया है।

सारणी क्रमांक 1.3

अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक–शिक्षिकाओं से प्राप्त आँकड़ें

समूह	प्रदत्तो की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	टी–मूल्य
अशासकीय शिक्षक	25	202	28.9	0.88
अशासकीय शिक्षिका	25	194.8	29	
df = 48 (1.67) t < (0.05) , सार्थक अंतर नही पाया गया				

.

. अतः इस परिकल्पना से यह स्पष्ट होता है कि अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के आत्म प्रभावकारिता में सार्थक अंतर नही पाया गया।

. अतः यह परिकल्पना स्वीकृत होती है।

विवेचना –

उपर्युक्त परिकल्पनाओं के विश्लेषण के पश्चात् निष्कर्षों से ज्ञात होता है कि शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के शिक्षकों के आत्म प्रभावकारित में सार्थक अंतर पाया गया। इसका कारण हो सकता है कि अशासकीय विद्यालय के शिक्षकों अध्यापन कार्य के प्रति विद्यालय प्रबंधन का अधिक दबाव पाया जाता है फलस्वरूप वह विद्यार्थियों पर विशेष ध्यान देते हुए विद्यार्थी वर्ग के समस्याओं को अच्छी तरह से समझने का प्रयास करते है तथा वह अपने अध्यापन कार्य में अधिक केन्द्रित होते है ताकि उनका कौशल और परिणाम अच्छा रहें। समय–समय पर शिक्षक अपनी कौशल क्षमता को विकसित करने हेतु अत्यधिक प्रयास रहते है। शासकीय विद्यालय के शिक्षक में अध्यापन कार्य के अतिरिक्त शासन द्वारा अन्य शासकीय कायों में संलिप्त होने के कारण अध्यापन कार्य पर विशेष ध्यान नही दे पाते है जिससे उनकी आत्म प्रभावकारिता में अभाव पाया जाता है। शासकीय विद्यालय के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं में आत्म प्रभावकारिता में सार्थक अंतर पाया गया। इसका कारण हो सकता है कि शासकीय पुरूष शिक्षकों में महिला शिक्षकों की अपेक्षा अधिक समय होने के कारण वह शासन द्वारा दिए विभिन्न कार्यों में अधिक संलग्न होते है जिससे उनके कौशल का अधिक विकास होता है। महिला शिक्षक घर व परिवार के कार्यों के कारण अधिक समय नही दे पाते है। इस कारण पुरूष शिक्षकों को विद्यार्थियों को अधिक समझने का अवसर प्राप्त होता है जिससे उनकी आत्म प्रभावकारित महिला शिक्षकों की अपेक्षा अधिक पाई जाती है।

सुझाव –

शासकीय विद्यालयों के शिक्षकों को अध्यापन के अतिरिक्त शासकीय कार्यों में संलग्न कम किया जाना आवश्यक होगा। शिक्षकों विद्यार्थियों के अध्यापन कार्य में अत्यधिक ध्यान केन्द्रित करने से वह विद्यार्थियों के साथ अधिक समय व्यतीत करेंगे उनकी समस्याएँ व निदान करने में उन्हें समझने में सहायता मिलेगी। जिससे उनकी आत्म प्रभावकारिता में वृद्धि होगी। परिणामस्वरूप विद्यार्थी अधिक सफल होंगे।

संदर्भ ग्रंथ सूची –

- **Aravind, A., & Prasad, R. (2018).** A study on the Relationship between SelfActualization Level of Teachers and their Teaching Effectiveness at a Post Graduate Management Program, Amrita Vishwa Vidyapeetham, Department of Education. Hindi, Amrita Vishwa Vidyapeetham. Retrieved June 03, 2018, from https://www.amrita.edu/sites/ default /files /a-study-onSuraj Punj Journal For Multidisciplinary Research, 9(6), 2394-2886.
- **Brang San,Orlando Rafael González Gonzále (2022) At.El.,** A Comparative Study Of Teachers' Self-Efficacy For Teaching In Primary Education According To Gender, Years Of Teaching Experience, And Educational Background At Six Church-Based Primary Schools In Northern Shan State, Myanmar, 14(1), 301-315
- **Chandrika & Sandhu (2022),** Study of self-efficacy amongst Higher Secondary school Teachers with respect to teaching experience and Gender, Journal of Positive School Psychology, 6(2), 195-199
- **Griffin, Nicholas Manuel (2022),** "A Comparative Study of Self-Efficacy Between Teachers in Traditional or Alternative Certification Pathways" (2022). *Doctoral Dissertations and Projects*. 3935. https://digitalcommons.liberty.edu/doctoral/3935
- **Gosia Marschall (2021),** The role of teacher identity in teacher self-efcacy development: the case of Katie, Journal of Mathematics Teacher Education, 25, 725-747.
- **Jena, A. K. (2017**. Levels of Self-actualization, Socio-economic Status and Job-satisfaction of University and College Teachers, International Journal of Research, 4(14), 3811-3831.
- **Pradeep Kumar T. (2013),** Journal of Mathematics Teacher Education 2(1), GLOBAL RESEARCH ANALYSIS, 34-34
- **Rani A, Sharma S. (2020),** Occupational Stress in Relation to Teacher Self - Efficacy and Spiritual Intelligence of Women Teachers. Biosc.Biotech.Res.Comm. 2020;13(4)
- **साहब एवं रजनी (2019),** विश्वविद्यालय शिक्षको ं के आत्म–वास्तविकीकरण का तुलनात्मक अध्ययन, Suraj Punj Journal For Multidisciplinary Research 9(6), 33-46